कार्य पर सरकार द्वारा किए गये वार्षिक व्यय की राशि 1989-90 में लगभग 8.0 करोड़ रुपए थी।

राजस्थान में परमाणु विद्युत संयंत्र

942. **डा० अबरार अहमद खान :** क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) राजस्थान में वर्तमान में कौन-कौन से परमाणु विद्युत संयंत्र हैं तथा उनकी कितनी क्षमता है और उनके द्वारा कितनी विद्युत उत्पादित की जा रही है ;

(ख) पिछले दो वर्षों के दौरान कौन-कौन से संयंत्र बन्द रहे, वे कितने दिनों तक बन्द रहे और इसके कारण क्या हैं ;

(ग) क्या आठवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान राज्य में कोई नये परमाणु विद्युत संयंत्र स्थापित किए जाने का विचार है ; यदि हां, तो किन-किन स्थानों पर और उनकी क्षमता कितनी-कितनी होगी ;

(घ) परमाणु विद्युत के उत्पादन पर देश में कितना धन खर्च किया जा रहा है, उन के द्वारा प्रतिवर्ष कितनी मात्रा में विद्युत का उत्पादन किया जा रहा है और इस संबंध में राजस्थान का ब्यौरा क्या है ;

(ङ) क्या परमाणु विद्युत संयंत्रों का पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है ; यदि हां, तो उसे दूर करने के लिए क्या उपाय किए जा रहे हैं ?

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय में राज्य मंत्री साथ में मानव संसाधन विकास मंत्रालय में शिक्षा विभाग में राज्य मंत्री का अतिरिक्त प्रभार (प्रो० एम० जी० के० मेनन) : (क) दो यूनिट, जो राजस्थान परमाणु बिजलीघर (राजस्थान परमाणु बिजलीघर 1 तथा 2) के नाम से जाने जाते हैं और जिनमें से प्रत्येक की क्षमता 220 मेगावाट है, इस समय चालू हैं। इन दोनों यूनिटों ने वर्ष 1988 में कुल मिलाकर 1868 मिलियन किलोवाट घन्टे (मिलियन यूनिट) और वर्ष 1989 में 1609 मिलियन यूनिट बिजली पैदा की है।

(ख) राजस्थान में, पिछले दो वर्षों में, अर्थात 1988 और 1989 में राजस्थान परमाणु बिजलीघर का पहला और दूसरा यूनिट काम करते रहे। नीचे यह बताया जा रहा है कि पिछले दो वर्षों में ये यूनिट कितने दिन और किन कारणों से बन्द रहे :—

यूनिट	वर्ष	यूनिट कितने दिन बंद रहा	कारण
राजस्थान परमाणु बिजलीघर-I	1988	125	15 बार मजबूरन और 4 बार निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार।
राजस्थान परमाणु बिजलीघर-I	1989	166	10 बार मजबूरन और 1 बार निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार।
राजस्थान परमाणु बिजलीघर-II	1988	35	11 बार मजबूरन और 4 बार निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार।
राजस्थान परमाणु बिजलीघर-III	1989	75	7 बार मजबूरन और 1 बार निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार।

(ग) जी, हां। निर्माणाधीन दो यूनिट (राजस्थान परमाणु विद्युत परियोजना 3 और 4), जिनमें से प्रत्येक 235 मेगावाट क्षमता का है, के अलावा 4 और यूनिट (राजस्थान परमाणु विद्युत परियोजना 5 से 8 तक), जिनमें से प्रत्येक 500 मेगावाट क्षमता का होगा, उसी स्थल पर लगाए जाएंगे।

(घ) कुल मिलाकर 1230 मेगावाट की स्थापित क्षमता वाले जो 3 परमाणु बिजलीघर, अर्थात् तारापुर परमाणु बिजलीघर, राजस्थान परमाणु बिजलीघर और मद्रास परमाणु बिजलीघर, इस समय वाणिज्यिक स्तर पर काम कर रहे हैं, उनके प्रचालन और रख-रखाव पर पिछले वित्त वर्ष में लगभग 173.00 करोड़ रुपये खर्च हुए हैं। इन तीनों बिजलीघरों ने वर्ष 1988 में 6068 मिलियन यूनिट और वर्ष 1989 में 3984 मिलियन यूनिट बिजली पैदा की थी जिसमें राजस्थान परमाणु बिजलीघर के दोनों यूनिटों का योगदान 1988 तथा 1989 के वर्षों में क्रमशः 1868 मिलियन यूनिट और 1609 मिलियन यूनिट था।

(ङ) हमारे देश में परमाणु बिजलीघरों के प्रचालन से पिछले अनेक वर्षों में मिले अनुभव से यह पता चला है कि इन बिजलीघरों से पर्यावरण में उन्मुक्त होने वाली रेडियोधर्मिता की मात्रा अनुमेय सीमा के भीतर ही रही है तथा उत्पादनरत परमाणु बिजलीघरों के समीप की पर्यावरण सर्वेक्षण प्रयोगशालाओं द्वारा किए गए सर्वेक्षण के आधार पर यह पाया गया है कि पर्यावरण पर कोई भी प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा है।

Enquiry against Director, Central Hindi Institute, Agra

943. SHRI N. RAJANGAM: Will the PRIME MINISTER be pleased to state:

(a) whether any enquiry was instituted in 1981 and again in October, 1986 regarding Financial and Administrative irregularities against the Director, Central Hindi Institute, Agra; if so, what are the details of the charges;

(b) whether it is also a fact that the Committee so constituted had recommended for compulsory reirement of the Director;

(c) whether the Director went to the Court against his transfer to Guwahati; if so, the outcome thereof and the amount spent by the Institution in this regard; and

(d) what action has been taken by Government against the Director?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF SCIENCE AND TECHNOLOGY WITH ADDITIONAL CHARGE OF THE MINISTER OF STATE IN DEPARTMENT OF EDUCATION IN THE MINISTRY OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT (PROF. M. G. K. MENON): (a) to (d) In 1981, a departmental Inspection Team was set up to enquire into certain financial and administrative irregularities alleged against the Director, Kendriya Hindi Sansthan (Central Hindi Institute), Agra. On receipt of complaints from various sources, another Enquiry Committee was constituted on 9.10.86 to investigate the complaints of financial and administrative irregularities allegedly committed by the Director of the Sansthan. The complaints investigated by the Inspection Team and the Enquiry Committee related to procedural irregularities in making purchases in the Sansthan, promotion/appointment of staff, unauthorised payments, improper re-appropriation of funds from one head to another, favouritism and partial treatment to certain employees, irregular constitution of Selection Committee/Promotion Committee, harassment of certain employees, misuse of staff cars etc. The Committee has made no recommendation regarding compulsory retirement of the Director.

2. The Head-quarters of Dr. B. G. Misra, Director were transferred to Guwahati in December, 1987 for studying the problems of Hindi teaching in North East. Dr. B. G. Misra, however, filed a writ petition in